विशेष शिक्षा में परिवार, स्कूल और समुदाय की भूमिका

उषा मदान

आदर्श रूप से देखा जाए तो शिक्षा को विद्यार्थियों के संज्ञान और भावनात्मक कौशल का पूरा विकास करना चाहिए और अन्ततः उन्हें दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए अच्छे जीवन कौशलों से लैस करना चाहिए। उसे विद्यार्थी को एक सार्थक व्यक्तिगत जीवन और साथ ही उत्पादक कामकाजी जीवन के लिए तैयार करना चाहिए।

दुर्भाग्य से शिक्षा की वर्तमान अवधारणा में विद्यार्थियों के समग्र विकास की बजाय जानकारी प्राप्त करके अकादमिक प्रगति पर अधिक ध्यान दिया जाता है जबकि ज़रूरत इस बात की है कि विद्यार्थियों को अपनी क्षमता का यथासम्भव उपयोग करके आत्मविश्वास के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए। यद्यपि आज की शिक्षा प्रणाली में इस बात को दरकिनार किया गया है, लेकिन मुख्यधारा के अधिकांश बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं वैसे-वैसे देखकर, सुनकर, अपने अनुभवों का विश्लेषण करके और अपने आस-पास के वातावरण का अवलोकन करके कुछ हद तक अपने आप को इन कौशलों से लैस कर लेते हैं। इस प्रकार वे जीवन कौशलों के लिए स्व-प्रशिक्षित हो जाते हैं।

दुर्भाग्य से बौद्धिक रूप से विकलांग बच्चों के पास इन कौशलों की कमी होती है और इसलिए उनके लिए जीवन कौशलों के प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है, जिसके लिए सही समय पर शारीरिक (मोटर) कौशल, संज्ञान और भावनात्मक प्रशिक्षण से शुरुआत करनी होती है और बाद में कार्यात्मक शिक्षा और व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण देना होता है।

लेकिन जब बात विकलांग बच्चों को शिक्षित करने की हो तो एक निराशाजनक तथ्य यह है कि परिवार और समुदाय के लोग उनकी शैक्षिक प्रगति को मुख्यधारा के बच्चों के साथ तुलना करके मापते हैं, बिना इस बात पर विचार किए कि क्या बच्चा इसके लिए तैयार है और बच्चे की ज़रूरतें क्या हैं।

इससे पहले कि हम इस सन्दर्भ में प्रारम्भिक शिक्षा के सर्वोत्तम अभ्यासों की खोज करें, यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा का क्या अर्थ है। इसे केवल मुख्यधारा के पाठ्यक्रम, जो महज़ जानकारी प्राप्त करना है, का कमज़ोर संस्करण नहीं होना चाहिए।

विकलांग बच्चों के लिए आदर्श शिक्षा को समग्र रूप से एक कार्यक्रम पर केन्द्रित होना चाहिए और उसका अन्तिम लक्ष्य यह होना चाहिए कि बच्चा स्वतंत्र रूप से जीवन जी सके। इसके लिए प्रशिक्षण यथाशीघ्र शुरू किया जाना चाहिए। जिससे उनकी किशोरावस्था और वयस्कावस्था के जीवन कौशलों की नींव बने और जो मुख्यतः स्वतंत्र रूप से जीवनयापन सम्बन्धी कौशल प्रदान करने पर ध्यान केन्द्रित करे। उसके बाद व्यक्तिगत क्षमताओं के आधार पर व्यावसायिक प्रशिक्षण देना चाहिए, ताकि विद्यार्थी रोज़गार योग्य बनें और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सकें। किसी भी प्रकार की विकलांगता को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रशिक्षित न करने का कारण नहीं माना जाना चाहिए। विकलांग बच्चों को बिना किसी रोक-टोक के सही तरीक़े से शिक्षित होने का प्रत्येक अवसर दिया जाना चाहिए। उन्हें उनकी आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे अपनी चुनौतियों के बावजूद उपयुक्त रोज़गार पाने के साथ-साथ स्वतंत्र रूप से जीवन जीने की क्षमता विकसित कर सकें। विशेष शिक्षा ऐसी हो जो उन्हें सशक्त बनाए (ताकि उन्हें परिवार या समाज का 'दायित्व' न माना जाए, जैसा कि अकसर होता है)।

विकलांग बच्चे को शिक्षित करने में तीन मूलभूत घटक होते हैं *स्कूल*, *परिवार* और *समुदाय*, जिन्हें निर्विवाद रूप से एक-दूसरे का पूरक बनकर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभानी होती हैं। जब ये तीनों साथ मिलकर कार्य करते हैं तो स्वीकरण, सम्मान और समायोजन जैसे उद्देश्य निश्चित रूप से प्राप्त हो सकते हैं, यह सशक्तिकरण और समावेशन की ओर ले जाता है जो विशेष शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य और विकलांग बच्चों का अधिकार है।

परिवार की भूमिका

इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि माता-पिता ही बच्चे की देखभाल करने वाले मुख्य लोग हैं, जिनके जीवन का लक्ष्य यह देखना है कि उनके बच्चे अपने दम पर स्वतंत्र और कामयाब हो जाएँ। विकलांग बच्चों की चुनौतियों के बारे में पारिवारिक जागरूकता, बिना किसी शर्त के उनका स्वीकरण और भाई-बहनों की सहभागिता जैसी बातें विकलांग बच्चे को शिक्षित/प्रशिक्षित करने में अत्यन्त उत्पादक तरीक़े से बहुत योगदान देती हैं।

वैसे तो स्कूल और अन्य उपचार प्रशिक्षण की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाते हैं लेकिन माता-पिता और परिवार की गहरी भागीदारी उन क्षमताओं तक पहुँचने के लिए महत्त्वपूर्ण होती है जो प्रत्येक बच्चे के लिए निर्धारित लक्ष्यों के लिए आवश्यक है। हमारे पास इस बात के सबूत हैं कि जिन बच्चों को अपने परिवार का समर्थन प्राप्त होता है, वे स्वतन्त्र और उत्पादक बनने के लिए हर तरह के प्रशिक्षण में सफल होते हैं।

समुदाय की भूमिका

जिस समुदाय में बच्चा बड़ा होता है, उसे यह समझना चाहिए कि विकलांग बच्चा सिर्फ़ एक परिवार की ज़िम्मेदारी नहीं है। समावेशन एक सामाजिक कार्य है और यह वास्तविक अर्थों में तभी सम्भव है जब पड़ोसी और आम जनता यह समझें कि बच्चों को पहले बच्चों के रूप में ही समझना चाहिए और जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें स्वीकरण और आवश्यक सहायता दी जानी चाहिए। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि दृष्टिकोण और धारणाएँ हमारे कार्यों को प्रभावित करती हैं, इसलिए यह बेहद ज़रूरी है कि सभी लोग विकलांग बच्चों को उनके परिवारों से स्कूलों में जाने की प्रक्रिया को सुचारू बनाने और अन्ततः समाज में अपनी जगह लेने में मदद करें।

विद्यालय की भूमिका

कोई भी स्कूल जो विकलांग बच्चों को शिक्षा देना चाहता है, फिर चाहे वह एक विशेष सुविधा के रूप में हो या एक समावेशी व्यवस्था के रूप में, उसका प्राथमिक उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह बच्चों के समग्र विकास के लिए अधिगम का अनुकूल माहौल प्रदान करे और उसे बनाए रखे। उन्हें परिवारों और समुदाय के साथ यथासम्भव जुड़ना चाहिए और उन्हें अपने कार्य में शामिल करना चाहिए। पाठ्यक्रम को *शारीरिक, भाषाई, भावनात्मक, संज्ञानात्मक* और *सामाजिक*— सभी पाँच विकासात्मक क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत शिक्षा योजनाओं में आकलन के मानदण्ड प्रत्येक क्षेत्र के तहत शुरुआती स्तर और बाद में अपेक्षित स्तर (लक्ष्य) का विद्यार्थी की चुनौतियों और क्षमताओं से मिलान करते हुए स्पष्ट रूप से निर्धारित किए जाने चाहिए। आवश्यक चिकित्सीय हस्तक्षेप भी ज़रूर शामिल करने चाहिए।

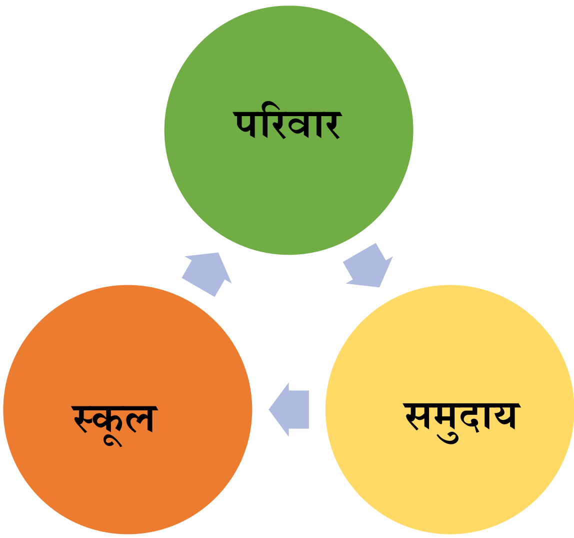
समग्रात्मक दृष्टिकोण : मण्डला

दीपिका स्कूल बौद्धिक रूप से विकलांग बच्चों का एक स्कूल है। इसमें इसी समग्र दृष्टिकोण की परिकल्पना की गई है और हमारा शिक्षण उद्देश्य है बौद्धिक विकलांगता वाले बच्चों को यथासम्भव स्वतंत्र जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित करना।

हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रम का नाम मण्डला है जो एक करणीय एवं संरचित कार्यक्रम है। हम बौद्धिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए शैक्षिक नवाचारों के विकास और कार्यान्वयन के लिए लगभग पन्द्रह वर्षों से इस रणनीति का उपयोग कर रहे हैं और हमें यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि यह हमारे विद्यार्थियों को स्वतंत्र बनाने में काफ़ी सफल रहा है। इस दौरान विकलांग बच्चों के अवलोकन और उनके साथ अपने अनुभवों के आधार पर हम यह समझ चुके हैं कि इस तरह की समग्रात्मक शिक्षा आज के समय की माँग है और इसमें स्वतंत्र रूप से दैनिक जीवन जीने के कौशल, सामाजिक कौशल, सम्प्रेषण कौशल, मोटर कौशल और कार्यात्मक शिक्षा को शामिल करना चाहिए एवं उसके बाद व्यावसायिक कौशल का प्रशिक्षण देना चाहिए।

इस उपकरण का उद्देश्य बच्चों के समग्र प्रशिक्षण के लिए साक्ष्य आधारित अभ्यासों को संक्षेप में प्रस्तुत करना है जो ऊपर चर्चित तीन प्रमुख घटकों अर्थात स्कूल, परिवार और समुदाय की पहचान और वर्णन करता है। इसमें विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह के शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अभ्यासों का एक सेट है।

यह संरचित हस्तक्षेप जो प्रशिक्षक-निर्देशित है और संसाधनों के नियोजित सेट का उपयोग करता है। यह अधिगम के औपचारिक और अनौपचारिक दोनों वातावरणों में होता है। इन तरीक़ों में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक एक व्यवहारवादी मॉडल है (उदाहरण के लिए प्रेरित करना और सुदृढ़ीकरण) जो कौशल के अधिग्रहण के बाद क्रमिक रूप से कम होती जाती है। ये उद्देश्य विद्यार्थी-केन्द्रित हैं और यथार्थवादी अपेक्षाओं के साथ उनकी क्षमता के अनुरूप हैं।



रणनीतियाँ

स्कूल

हमारा मुख्य पाठ्यक्रम कार्यात्मक शिक्षा के साथ जीवन कौशल, मोटर कौशल, सम्प्रेषण कौशल और सामाजिक कौशल पर केन्द्रित है; जिसके बाद व्यावसायिक कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ शिक्षक, सहकर्मी और चिकित्सक शामिल होते हैं।

परिवार

हम व्यक्तिगत परामर्श सत्र आयोजित करते हैं, ख़ासकर माताओं के लिए, जो भावनात्मक प्रबन्धन के लिए होते हैं। बिना शर्त स्वीकरण के लिए माता-पिता के लिए परामर्श; भाई-बहनों के लिए तिमाही वर्कशॉप; दादा-दादी और परिवार के अन्य महत्त्वपूर्ण सदस्यों के लिए अर्ध-वार्षिक विस्तारित परिवार कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं।

समुदाय

इसका उद्देश्य जनता को इस तथ्य के प्रति जागरूक करना है कि विकलांग बच्चे केवल उनके अपने परिवार की ज़िम्मेदारी नहीं हैं, बल्कि एक सामाजिक ज़िम्मेदारी हैं। कॉरपोरेट संस्थाओं, सार्वजनिक सेवा विभागों और मुख्यधारा के स्कूलों को शिक्षित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

मण्डला प्रक्रिया

स्कूल में

हमारे पाठ्यक्रम के उद्देश्य इस प्रकार हैं : जीवन कौशल, सामाजिक कौशल, सम्प्रेषण कौशल विकसित करना और विशिष्ट कौशल प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देना।

- *जीवन कौशल (स्वतन्त्र रूप से दैनिक जीवनयापन के कौशल)* : स्कूल में प्रवेश लेते समय बच्चे के दैनिक जीवन सम्बन्धी कौशल के स्तरों का आकलन करने के साथ यह प्रकिया शुरू होती है। मुख्य रूप से शौचालय प्रशिक्षण, स्नान, व्यक्तिगत स्वच्छता/देखभाल और स्वतन्त्र रूप से खाना खाने की आदतों पर ध्यान दिया जाता है।

  ऐसा देखने में आया है कि कई माता-पिता बच्चों को जीवन के बुनियादी कौशलों का जल्द से जल्द प्रशिक्षण देने का महत्त्व नहीं समझते हैं। वे या तो बच्चों की क्षमता को कम आँकते हैं या बच्चों को बहुत अधिक संरक्षण देना चाहते हैं और ऐसा करने के परिणामों से अनजान उन्हें बच्चों के लिए हमेशा इन चीज़ों को करते रहने में कोई में ग़लती नज़र नहीं आती। ऐसे मामलों में मुख्य चुनौती यह है कि इन विद्यार्थियों को 'बड़ा होने' की अनुमति नहीं दी जाती। उदाहरण के लिए, माता-पिता अपने बड़े हो रहे बच्चों को नहलाते हैं या उन्हें अपने साथ अपने ही बिस्तर पर सुलाते हैं। इस वजह से बच्चे *मेरा शरीर* की अवधारणा को समझने में विफल हो जाते हैं और उन्हें अच्छे स्पर्श और बुरे स्पर्श के बीच अन्तर न कर पाने का ख़तरा होता है। वे अपने व्यक्तिगत स्थान की अवधारणा में भी प्रशिक्षित नहीं हो पाते जबकि वयस्कता की ओर बढ़ते समय अपनी स्वयं की सुरक्षा के लिए उचित सामाजिक सीमाओं को समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

  कई माता-पिता यह नहीं समझते कि बौद्धिक विकलांगता वाले बच्चों के जीवन में एक निश्चित पड़ाव पर सामान्य शारीरिक और तत्सम्बन्धी यौन विकास होगा और उन्हें इसे प्रबन्धित करने के लिए पहले से ही भली-भाँति तैयार करना होगा। अन्यथा यह न केवल माता-पिता के लिए एक ऐसी चुनौती बन जाता है जिसके लिए वे तैयार नहीं होते, बल्कि यह किशोरावस्था से जुड़े व्यवहार सम्बन्धित मुद्दों को भी जन्म देता है। यह स्थिति माता-पिता और बच्चों दोनों के लिए काफ़ी चुनौतीपूर्ण और निराशाजनक हो सकती है।

  जब कोई बच्चा हमारे स्कूल में प्रवेश लेता है तो इन सभी बातों को सम्बोधित करने के लिए बच्चों की जीवनशैली के बारे में तीन स्तर की जानकारी ली जाती है— पहली माता-पिता से, दूसरी एक प्रभारी शिक्षक से और अन्तिम व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, स्कूलिंग के शुरुआती दो महीनों के बाद *स्कूल में रात भर रहने* के कार्यक्रम से। यह हमें बच्चे के शौचालय से सम्बन्धित आचरण, व्यक्तिगत स्वच्छता, दैनिक जीवनयापन की कौशल क्षमताओं और तत्सम्बन्धी निर्भरता के बारे में एक स्पष्ट जानकारी देता है और इससे अपने विशेष बच्चे के इन महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर माता-पिता के दृष्टिकोण का भी पता चलता है। ये अवलोकन हमें जीवन कौशल में व्यक्तिगत शिक्षा योजनाओं के लिए लक्ष्य निर्धारित करने में और माता-पिता को घर पर अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए शिक्षित और संलग्न करने में मदद करते हैं। इसके साथ में संरचित मोटर कौशल प्रशिक्षण भी दिया जाता है क्योंकि दैनिक कार्यों और व्यक्तिगत देखभाल के लिए शारीरिक फिटनेस, मांसपेशियों का समन्वय और शक्ति आवश्यक हैं।

- *सामाजिक कौशल* : बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों को सामाजिक कौशल प्राप्त करने, समझने और उनके अनुप्रयोग में समस्याएँ होती हैं और इन्हें सीखने और आत्मसात करने के लिए उन्हें बहुत सारे

प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसके लिए उन्हें विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में प्रशिक्षण दिया जाता है, जैसे— भेंट करने के लिए घरों में जाना, सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेना, मॉल व सार्वजनिक सेवा विभागों में जाना, छोटी (दो रातों की) और लम्बी (सात रातों की) शैक्षिक यात्राओं पर जाना आदि। उनकी बातचीत और व्यवहार की शैलियों के अवलोकनों के आधार पर उनके सामाजिक कौशल व व्यक्तिगत कौशल विकास के स्तर, सामाजिक कौशलों की कमी/अधिकता और सामाजिक अटपटेपन के बारे में नोट्स बनाए जाते हैं, और फिर उसके अनुसार व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ बनाई जाती हैं।

- *सम्प्रेषण कौशल* : इसमें सामाजिक सम्बन्धों की बेहतरी के लिए आवश्यकता आधारित अर्थपूर्ण और स्थितिपरक बातचीत के संवर्धन पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसके लिए अवसरपरक हस्तक्षेप डिज़ाइन किए जाते हैं और वैयक्तिक रूप से तथा फोन पर, दोनों तरह से, विद्यार्थी की दिन भर की संलग्नता और भागीदारी बढ़ाई जाती है। पहले स्कूल और परिवार के भीतर अवसर निर्मित किए जाते हैं और फिर उन्हें सामाजिक परिस्थितियों में आगे ले जाया जाता है।

  अशाब्दिक (Nonverbal) बच्चों के लिए पहले तो शिक्षक उनके व्यवहार का आकलन और पहचान करते हैं जो सम्प्रेषण के आशय को बताता है। बच्चे को बेहतर ढंग से समझने के लिए उसके माता-पिता से उन सामान्य व्यवहारों के बारे में भी जानकारी एकत्र की जाती है जिसे वह अलग-अलग भावनाओं/ज़रूरतों को व्यक्त करने के लिए प्रदर्शित करता है। इसके अलावा व्यवहार का एक *कार्यात्मक विश्लेषण* (पूर्ववर्ती-व्यवहार-परिणाम) किया जाता है ताकि व्यवहार सम्बन्धी हस्तक्षेप के लक्ष्यों के बारे में एक अन्तर्दृष्टि मिल सके, उदाहरण के लिए भूख लगने पर झल्लाना या चिड़चिड़ाना या किसी कार्य से बचने के लिए भाग जाना। फिर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाता है कि वे इन व्यवहारों के स्थान पर कुछ अधिक समझदार इशारों/सांकेतिक भाषा का प्रयोग करें जिसका दृढ़ीकरण घर पर भी किया जाता है। हमारे यहाँ माता-पिता के लिए सांकेतिक भाषा सम्बन्धी कार्यशालाएँ भी हैं ताकि बच्चे के साथ स्कूल और परिवार के संवाद करने के तरीक़े में कोई अन्तर न हो।

- *कार्यात्मक शिक्षा* : एक बार जब बच्चे को ये बुनियादी कौशल हासिल हो जाते हैं तो समय और धन की बुनियादी अवधारणाएँ, कैलेण्डर पढ़ना, क्षेत्रों, स्थल चिह्नों की पहचान करना जैसी कार्यात्मक शिक्षा दी जाती है। इसके लिए उन्हें वास्तविक जीवन की स्थितियों में ले जाकर बहुत ही व्यावहारिक तरीक़े से सिखाया जाता है। प्रशिक्षण मूल बातों से शुरू किया जाता है जैसे कि उन्हें दिन की समयावधि से सम्बन्धित गतिविधियों की अवधारणाओं को समझाना, जल्दी और देर, कम और अधिक की अवधारणाएँ स्पष्ट करना और फिर धीरे-धीरे उच्चतर स्तर की उन अवधारणाओं की ओर बढ़ना जो दिन-प्रतिदिन के जीवन में आवश्यक हैं।

- *कौशलों का प्रशिक्षण* : जब विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से जीवनयापन करने के लिए आवश्यक उपर्युक्त सभी बुनियादी कौशल हासिल कर लेते हैं तब उन्हें उपयुक्त व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसके बाद गृह प्रबन्धन के कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें शुरुआत में व्यक्तिगत तैयारी, गृह प्रबन्धन कौशल, परिवार के अन्दर और बाहर अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के कौशल, पास-पड़ोस से परिचित होना, स्वतंत्र रूप से यात्रा कर पाने के कौशल और अन्त में विशिष्ट ऑन-साइट कौशल के प्रशिक्षण दिए जाते हैं।

परिवार

विकलांग बच्चों को यथासम्भव स्वतंत्र रूप से जीवनयापन करने के लिए भली प्रकार से लैस करने में परिवार का भावनात्मक समर्थन सबसे शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण होता है। उत्कृष्ट परिणाम तब दिखाई देते हैं जब परिवार भी इस प्रक्रिया में शामिल होते हैं। व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रशिक्षण में अपने बच्चे के सम्बन्ध में माता-पिता के सपने, प्रयास और दृष्टिकोण उनके प्रदर्शन को मज़बूत बना देते हैं जो उन्हें सशक्त बनाने के लिए आवश्यक है।

बच्चों का एक स्नेही व सहायक वातावरण में पोषण करना, वे जैसे हैं उन्हें वैसे ही स्वीकार करना और उनका सम्मान करना— इन सबके लिए सकारात्मक परवरिश और माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों की निरन्तर भागीदारी बहुत आवश्यक है। यह सभी माता-पिता, विशेषकर माताओं के लिए काफ़ी चुनौतीपूर्ण होता है और उन्हें इसमें अपनी गहरी ऊर्जा लगानी पड़ती है। इसलिए, माताओं और माता-पिता दोनों के लिए नियमित रूप से परामर्श सत्र आयोजित किए जाते हैं, ताकि वे अपने बच्चे की क्षमता व सीमाओं के बारे में जागरूक हो सकें और उनकी व्यक्तिगत भावनाओं का प्रबन्धन कर सकें।

आध्यात्मिक उपचार कार्यशालाओं, कला-आधारित थेरेपी के माध्यम से आत्मनिरीक्षण, मूवमेंट थेरेपी, योग थेरेपी और पारिवारिक सम्बन्ध दिवस के माध्यम से माता-पिता के सशक्तिकरण कार्यक्रम की पेशकश की जाती है। इसके बाद भाई-बहनों के कार्यक्रम और विस्तारित परिवार के सदस्यों के

लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है क्योंकि वे भी परिवार के स्तर पर बच्चे के उस स्वीकरण और समावेशन में योगदान देते हैं जिसकी उसे आवश्यकता होती है। इससे माताओं का तनाव भी काफ़ी हद तक कम हो जाता है।

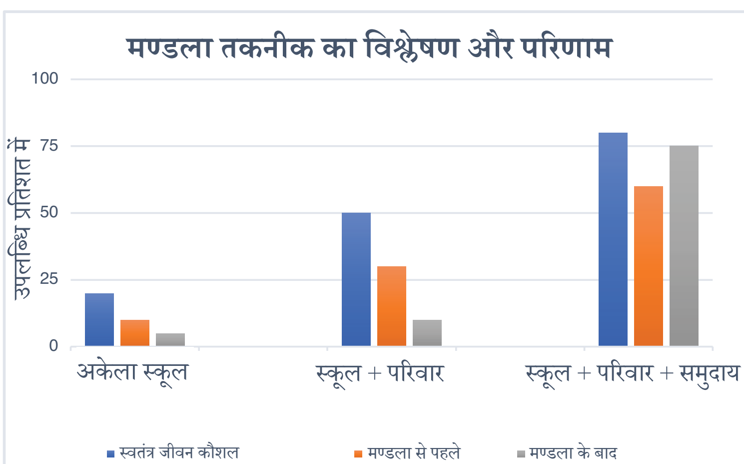
समुदाय

बौद्धिक विकलांगता वाले विद्यार्थियों और उनके परिवारों के जीवन की समग्र तैयारी और गुणवत्ता में समुदाय निस्सन्देह एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुर्भाग्य से इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि समाज में विकलांगता को एक कलंक के रूप में देखा जाता है। जागरूकता की कमी और नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण हमारा समाज विकलांगता और बच्चा क्या नहीं कर सकता— इस पर अधिक ध्यान देता है, बजाय इसके कि उन तक पहुँचे और उन्हें सामुदायिक ज़िम्मेदारी के रूप में समायोजित करे। इसे केवल उचित सार्वजनिक शिक्षा और पास-पड़ोस के संवेदीकरण कार्यक्रमों के माध्यम से सम्बोधित किया जा सकता है। इसलिए कॉरपोरेट संस्थाओं, सार्वजनिक सेवा विभागों और मुख्यधारा के स्कूलों, निवासियों के कल्याण संघों, वाहन कर्मचारियों और घरेलू कार्यों में मदद करने वालों के साथ नियमित रूप से बातचीत की जाती है। ऐसा करने से सभी लोगों को यह बात समझने में मदद मिलती है कि हमें समानुभूतिपूर्ण और सहायक होना चाहिए न कि आलोचनात्मक या सहानुभूतिपूर्ण।

बच्चों को सब्ज़ी बाज़ार, मॉल, दूध के बूथ, रेलवे स्टेशन, डाकघर, फार्मेसियों में ले जाया जाता है, जहाँ वे बातचीत करते हैं, सामान ख़रीदते हैं। साथ ही इन अवसरों का उपयोग इस बात के लिए भी किया जाता है कि इन सारे सेवा प्रदाताओं को विकलांग बच्चों से सम्बन्धित मुद्दों पर शिक्षित किया जाए जिससे वे यह समझ सकें कि इन बच्चों को क्यों और कैसे समायोजित करना चाहिए।

मण्डला कार्यक्रम का विश्लेषण और परिणाम

निम्नांकित चार्ट स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि विकलांग बच्चों की शिक्षा/प्रशिक्षण और प्रत्येक विकलांग बच्चे की शिक्षा के तीन महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों अर्थात् स्वतंत्र जीवनयापन के कौशल, रोजगार पाने की योग्यता और समावेशन सम्बन्धी उनके प्रदर्शन में स्कूल, परिवार और समुदाय ने कितना योगदान दिया।



इस प्रकार बौद्धिक रूप से विकलांग विद्यार्थियों की आदर्श शिक्षा स्कूलों के परिवारों के साथ जुड़कर शुरू होनी चाहिए और साथ ही समाज को भी संवेदनशील बनाना चाहिए। अन्ततः यह दृष्टिकोण इन बच्चों को स्कूल और परिवार के वातावरण से सम्मान के साथ सामुदायिक जीवन जीने की ओर ले जाएगा।



उषा मदान ने एमएससी (जेनेटिक्स), डीसीएस, एमएस (मनोचिकित्सा और परामर्शन) की उपाधि प्राप्त की है। वे 2007 से दीपिका स्पेशल स्कूल में पीआरओ और काउंसलर समन्वयक हैं। इससे पहले उन्होंने प्रमेय हेल्थ लिमिटेड में परामर्शी मनोचिकित्सक के रूप में, आईआरसी, बेंगलूरु में स्रोत फैकल्टी के रूप में और पूर्ण प्रज्ञा शैक्षिक संस्थान, बेंगलूरु में अभिभावक कार्यशालाओं की फैकल्टी के रूप में काम किया है। वे गिव इंडिया फॉर वॉयसलेस की संस्थापक ट्रस्टी हैं। उनसे ushamadan2@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल